7

यीशु की पेशियां

मत्ती 26:57-27:31; मरकुस 14:53-15:20; लूका 22:54-23:25; यूहन्ना 18:12-19:16

''क्योंकि बहुतेरे उसके विरोध में झूठी गवाही दे रहे थे, पर उन की गवाही एक सी न थी'' (मरकुस 14:56) ।

मसीह का क्रूस पर चढ़ाया जाना इतना डरावना है कि हम इस तक ले जाने वाली अन्य लज्जाजनक घटनाओं को या तो नज़रअंदाज़ करना या फिर भूल जाना चाहते हैं। आरम्भ से अन्त तक मसीह की पेशियां गैर कानूनी थीं! यीशु के साथ इतने भद्देपन और इतनी निर्दयता से व्यवहार किया गया कि शैतान भी शरमा गया होगा! पाप को शैतान भी काबू नहीं कर सकता!

उसकी पेशियां संसार के इतिहास में सबसे घटिया होनी थीं। यहूदा ने पकड़वाया, पतरस ने इनकार किया, दस प्रेरित बचाव के लिए भाग गए, चार कठपुतली हाकिमों अर्थात हन्ना, कायफा, पिलातुस और हेरोदेस ने ''जज'' का न्याय किया और अतिसम्मानित महासभा भीड़ के साथ मिल गई। पवित्रतम नगर (यरूशलेम) और कानून का नगर (रोम) संसार का सबसे बड़ा कानूनी तमाशा बनाने के लिए एक हो गए।

नियन्त्रण केवल और केवल यीशु के हाथ में था (यूहन्ना 10:17, 18; 19:10, 11)। उसने स्वेच्छा से यरूशलेम को जाना चुना था (लूका 9:51)। उसका ''समय'' आ गया था (यूहन्ना 17)। उसने अपने शत्रुओं को भड़का कर और अपनी गिरफ्तारी के लिए अवसर देकर उन्हें कार्य करने के लिए उकसाया। क्या हम इसे देख सकते हैं?

आज मसीह को प्रिय, कोमल हृदय और नाजुक यीशु बना दिया गया है। नहीं! वह तो ''मर्दों में मर्द'' था न कि महिमा पाया हुआ दुर्बल व्यक्ति। उसने शैतान को, यहूदी मत को और पूरे संसार को हाथ में लिया और उन पर विजय पाई। वह कभी किसी से भागा नहीं!

यहूदी मत (यरूशलेम) नैतिक और आत्मिक रूप से दिवालिया हो गया था। जैसे हम मनुष्य की बुरी हालत को देखते हैं वैसे ही हम परमेश्वर को उसकी सिद्धता में भी देखते हैं। अनुग्रह की यही महिमा है। यीशु किसी नगर में या किसी कोठरी में नहीं छिपा। उसने सार्वजनिक रूप से मन्दिर को शुद्ध किया (मत्ती 21:12, 13; मरकुस 11:15-17; लूका 19:45, 46)। यहूदी लोग भ्रष्टाचार में इतना डूबे हुए थे कि उन्होंने मन्दिर को पशुओं की मण्डी बना दिया था। यीशु ने केवल उसी को रोका। कितनी बड़ी हिम्मत है! कितनी सामर्थ है! यरूशलेम नगर के अन्दर ही उसने ''न्याय के दृष्टांत'' दिए। यीशु के साथ अस्पष्टता नहीं चलेगी या तो आप उसे स्वीकार करें या क्रूस

पर चढ़ा दें! उसके शत्रुओं ने यह कभी नहीं कहा कि, ''उसे डांटो।'' उनका कहना था, ''उसे मार ही डालो!''

धार्मिक अगुए यीशु की ''हाज़िर जवाबी से भयभीत'' थे। वे उसके आश्चर्यकर्मों को नकार नहीं सकते थे। यरूशलेम यीशु की सच्चाई का विरोधी और इसे नापसन्द करने वाला नगर था। धार्मिक अगुओं का उस पर या उसकी सेवकाई पर कोई नियन्त्रण नहीं था।

फसह के दौरान कोई दंगा नहीं चाहता था। यदि यहूदियों ने पर्व के दौरान यीशु को मार डालना चाहा होता तो उन्होंने योजनाएं बनाई होतीं और उन्हें लागू करने के लिए गुरुवार रात तक प्रतीक्षा नहीं करनी थी। दृश्य में यहूदा यहीं पर आया। यीशु के साथ रहने और यरूशलेम में उसकी शिक्षाओं को सुनने के कारण उसे पता था कि यीशु अपनी मृत्यु की घोषणा करता है। यहूदा को लगा कि वह इसका लाभ उठाए।

एक अर्थ में अपनी निकट मृत्यु की घोषणा उसके शत्रुओं के लिए अच्छी खबर थी, परन्तु फसह के दौरान इससे पैदा हुई अनिश्चितता के कारण वे भयभीत हो गए। उन्हें मछुआरों और अन्यों का, जो उसके चेले थे, भय नहीं था, परन्तु उन्होंने यीशु की सामर्थ को कम नहीं आंका। फरीसियों ने कहा, ''देखो, संसार उसके पीछे हो चला है'' (यूहन्ना 12:19)। विश्वास न करने वाले यहूदियों की नज़र में लाज़र का जी उठना मसीह की मृत्यु का कारण बना (यूहन्ना 11)। उन्हें डर था कि यीशु सारे संसार को अपने पीछे लगा लेगा!

यीशु द्वारा दी गई सच्चाई और उसके किए आश्चर्यकर्मों से पापियों को भयभीत हो जाना चाहिए था। परमेश्वर ने यरूशलेम के लोगों को मन फिराने का हर अवसर दिया, परन्तु उन्होंने प्रमाण को मानने से इनकार कर दिया। यीशु के कारण, धार्मिक अगुओं की न केवल धार्मिक पदवियां ही छिन रही थीं, बल्कि उनके आर्थिक लाभ का स्रोत भी छिन रहा था (यूहन्ना 11:47, 48)। हैरानी की बात नहीं कि कैफा ने घोषणा की कि यीशु का मरना आवश्यक है (यूहन्ना 11:49, 50)! आप कह सकते हैं, ''पर यहूदी तो आने वाले मसीहा की राह देख रहे थे।'' हां भी और नहीं भी। वे इसकी बातें करते थे; इससे लाभ उठाते थे ... परन्तु धार्मिक अगुओं द्वारा चाही जाने वाली सबसे अन्तिम पसन्द वह मसीहा था, जिसे परमेश्वर ने भेजा। उन्हें मालूम था कि वह उनका ''धंधा चौपट'' करवा देगा। शक्ति के साथ मिलकर घमण्ड घृणित काम करता है। घमण्डी लोग शक्ति को त्याग नहीं सकते। वे केवल सच्चाई को नकार सकते हैं, सच्चाई से लड़ सकते हैं और सच्चाई को नष्ट करने की कोशिश कर सकते हैं। आपे से बाहर आए यहूदियों ने यीशु पर ''दोषी'' होने की मुहर लगा दी। पिलातुस ने उसे ''दोषी नहीं'' घोषित किया (यूहन्ना 18:38)।

यीशु के मुकदमों की सबसे स्पष्ट अनियमितताओं में से नीचे दिए गए आधिकारिक विवरणों का उल्लंघन थे:

- दोषी व निर्दोष ठहराने का कोई भी निर्णय मुकदमा आरम्भ करने से पहले नहीं लिया जा सकता था।
- अपराध करते पकड़े जाने को छोड़ किसी को रात को गिरफ्तार करने का अधिकारियों को भी अधिकार नहीं था। गिरफ्तारी में जजों का कोई काम नहीं होता था।
- मृत्युदण्ड सम्बन्धी मुकदमों की सुनवाई रात को नहीं हो सकती थी।

- अपराधी को एक दिन में छोड़ा नहीं जा सकता था; दोषी ठहराने के आदेश के लिए भी विचार के लिए एक रात आवश्यक होती थी।
- यहूदी व्यवस्था में क्रूस पर चढ़ाए जाने के दण्ड का कोई प्रावधान नहीं था।
- जजों का आरोप लगाने वाले होने के साथ-साथ बचाव करने वाले होना आवश्यक था।
- इब्रानी व्यवस्था के अनुसार धर्म विद्रोह को प्रमाण नहीं माना जाता था।
- विवरण को अविश्वसनीय प्रमाण माना जाता था; इब्रानी व्यवस्था दो या तीन गवाहियों पर आधारित थी।
- महासभा के सबसे छोटे सदस्य पहले वोट डालते थे।
- महासभा के सदस्य का काम आरोपी का बचाव करना होता था।
- महासभा को आरोप तय करने का कोई अधिकार नहीं था ... केवल उनकी सुनवाई करने का ही अधिकार था।
- अदालत की सुनवाई पर्व के दिनों और सब्त की शाम करने की मनाही थी।
- आरोपी अपने विरुद्ध गवाही नहीं दे सकता था।
- महायाजक अपने कपड़े नहीं फाड़ सकता था।

जो सबसे बुरे थे वे अपने आप को सबसे अच्छा मानते थे। यह सोचना भी कितना भयंकर है कि लोग पाप में इतना डूब सकते हैं!

यहूदी पेशियां

यीशु की गिरफ्तारी इतनी निन्दनीय न होती तो यह नाटकीय होनी थी। यीशु के शत्रुओं को यीशु की शक्ति पर उसके प्रेरितों से अधिक विश्वास था। उन्होंने एक आदमी को गिरफ्तार करने के लिए बहुत बड़ी भीड़ (लगभग छह सौ या इससे अधिक लोग) भेजी! स्पष्ट रूप से यीशु को अपने आप को गिरफ्तार करवाने के लिए उनकी सहायता करनी पड़ी।

यीशु सर्वोच्च न्यायाधीशों के बीच में टेबल टेनिस की गेंद की तरह कभी इधर तो कभी उधर भेजा जाता रहा। पहले उसे महायाजक के पास ले जाया गया। यह महायाजक जीवनभर के लिए नियुक्त किया गया था, परन्तु उसके भ्रष्टाचार ने उसे निकाल दिया था। अब चाहे उसके पास यह उपाधि तो नहीं थी पर फिर भी वह शक्तिशाली था।

हन्ना ने उसे कायफ़ा के पास भेज दिया। इससे पता चलता है कि यीशु पर मुकदमा धार्मिक कारणों से नहीं, बल्कि राजनीतिक उद्देश्यों के लिए चल रहा था। हन्ना का दामाद कायफ़ा उस वर्ष का महायाजक था। हन्ना शक्तिशाली था, लोग उससे डरते थे और उससे घृणा करते थे। कायफ़ा उसका ''दूत पुत्र'' था, जो पूरी तरह उसके नियन्त्रण में था।

घमण्डी, अभिमानी और कहने से बाहर अहंकारी यहूदी अगुओं ने अपना धैय खो दिया। क्रूरतापूर्वक उन्होंने यीशु पर थूका, उसे थप्पड़ मारे, घूंसे मारे, गालियां दीं और बिना विचारे उसे भविष्यवाणी करने के ताने देने लगे (मत्ती 26:67, 68; मरकुस 14:65; लूका 22:63-65)। हम गालियां और थप्पड़ तो शायद सह सकते हैं पर *थूक*? थूक कौन सह सकता है ? परमेश्वर ने कैसे सहा ? यीशु ने थूक की भविष्यवाणी की थी (मत्ती 10:34; लूका 18:32)। यीशु की भविष्यवाणी

पूरी हुई। यहूदी अगुओं ने उसके मुंह पर और रोमियों सिपाहियों ने उस पर थूका (मत्ती 26:67; 27:30; मरकुस 15:19)। कितना गन्दा काम है यह! परमेश्वर का अनुग्रह *थूक* सहित कुछ भी सह सकता है!

पतरस ने अपने आप को ''शैतान की आग'' से सेंक दिया था (देखें मरकुस 14:54; लूका 22:55; यूहन्ना 18:18, 25)। ऐसा करते हुए उसने अपने आप को मसीह के बजाय शत्रु के अधिक निकट कर दिया। *खबरदार रहें कि आप कहां हैं और अपना समय किसके साथ बिता रहे हैं।*

थोड़ी देर बाद ही पतरस ने तीन बार यीशु का इनकार किया। फिर मुर्गे ने बांग दी और शैतान फूला नहीं समा रहा था। यीशु को पेशी के लिए कभी इधर और कभी उधर ले जाया जा रहा था। कायफ़ा के सामने से महासभा के सामने ले जाए जाने के समय उसे उस आंगन के निकट ले जाया गया था, जहां पतरस था। यीशु ने मुड़कर पतरस की ओर देखा तो प्रेरित का मन पिघल गया। वह बाहर जाकर ज़ोर-ज़ोर से रोया कि उसने क्या कर दिया (लूका 22:61, 62)।

यहूदियों के सर्वोच्च न्यायालय को एक बार फिर बड़ी महासभा के रूप में प्रशंसा मिली थी। इस के सदस्य इकहत्तर बड़े-बड़े लोग थे। उस दिन उनकी वैभवशाली पदवी का अन्त हो गया। निराशा में कैफ़ा ने यीशु को शपथ दिलाकर अपने विरुद्ध गवाही देने के लिए विवश किया (मत्ती 26:62-64)। यीशु ने उनके आरोप को स्वीकारा ही नहीं, बल्कि अपने विरुद्ध इस्तेमाल करने के लिए और प्रमाण दिए: ''बरन मैं तुम से यह भी कहता हूं, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे'' (मत्ती 26:64)। इतना सुनते ही यहूदियों ने उसे पिलातुस के पास भेज दिया।

यहूदी अगुए स्पष्टतया इस एक प्रश्न के पीछे थे जो पिलातुस ने यीशु से पूछा था: ''क्या तू यहूदियों का राजा है?'' यदि आरोप पहले ही नहीं लगाया गया था तो पिलातुस को कैसे मालूम था कि क्या पूछना है? इससे यह संकेत मिलता है कि किसी ने उस रात पहले ही पिलातुस से संपर्क किया था। रात के समय पिलातुस के पास कौन गया हो सकता है? सम्भवतया केवल महायाजक कायफ़ा ने ही ऐसा किया हो सकता था। फिर पिलातुस की पत्नी के दु:खी करने वाले स्वप्न का क्या अर्थ है (मत्ती 27:19)? इससे समझ आता है कि यहूदी अगुए पिलातुस द्वारा केस दोबारा खुलने पर अपमानित क्यों हुए थे। यहूदियों को लगा था कि सौदा हो गया है!

रोमी पेशियां

पुन्तुस पिलातुस यहूदियों से घृणा करता था और वे उससे घृणा करते थे। वे एक-दूसरे को देखना नहीं चाहते थे और अपने बीच में किसी बहस को जीतने के लिए दोनों कुछ भी कर सकते थे। अपनी पिछली गलतियों के रिकॉर्ड से पिलातुस को बहुत चौकस रहना चाहिए था। यहूदी खून चाहते थे, जबकि पिलातुस अपने राजनैतिक पद को बचाना चाहता था।

यहूदियों ने एक राजनैतिक विद्रोह के लिए परमेश्वर की निन्दा का आरोप लगाया। पिलातुस ने इस उपहास का भाग बनने से बचने की कोशिश की पर वह बच नहीं पाया। वह चाहता था कि निर्णय दूसरे लोग लें पर उन्होंने इनकार कर दिया। उसने बार-बार यीशु को ''दोषी नहीं'' करार दिया। निराश होकर उसने यीशु को हेरोदेस के पास भेज दिया।

यीशु ने जादू दिखाने की हेरोदेस की विनती स्वीकार नहीं की। हेरोदेस यीशु को केवल

पिलातुस के पास वापस भेज सकता था। इस प्रक्रिया से केवल एक ही बात हासिल हुई कि पिलातुस और हेरोदेस मित्र बन गए (लूका 23:12)।

यीशु के धैर्य पर पिलातुस चकित हुआ। बरअब्बा का इस्तेमाल करते हुए उसने यहूदियों को खुश करने के लिए यीशु को छोड़ने की कोशिश की। उन्होंने इसे नकार दिया। उन्होंने एक साधारण बदमाश बरअब्बा को छोड़ने के लिए कहा! लोग हमेशा बरअब्बा को ही छुड़वाना चाहेंगे।

यहूदी जीतकर भी हार गए। उन्होंने घोषणा की, ''कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं'' (यूहन्ना 19:15)। उन्होंने कैसर के लिए परमेश्वर को त्याग दिया। उन्होंने उसके आगे सिर झुकाया, जिससे वे घृणा करते थे, बल्कि चिल्लाते हुए कहा कि ''इसका लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो !'' (मत्ती 27:25)।

पिलातुस ने ''दोषी नहीं'' यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया! उसने अपने हाथ धो लिए थे पर यीशु ने दूसरों के पांव धोए थे। कितना बड़ा अन्तर है।

पिलातुस ने यहूदियों की इच्छा के आगे हार मान ली। यह सबसे बड़ा अपराध था! यहूदियों की तरह पूर्वाग्रह न रखें, हेरोदेस की तरह लोगों को न रिझाएं या पिलातुस की तरह कायर न बनें। इतिहासकार यूसबियुस[1] ने कहा है कि पिलातुस ने आत्महत्या कर ली। परमेश्वर ने यरूशलेम को (67-70 ईस्वी में टाइटस और रोमी सेना का इस्तेमाल करते हुए) मिटा डाला। परमेश्वर से पंगा न लें!

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणी

[1]यूसबियुस *एक्लेसिएस्टिकल हिस्ट्री* 2.7.